मनसा सेवा - 103

अव्यक्त बापदादा :- (15. 12. 2009)

➽ _ ➽ बापदादा यह क्यों कहते हैं क्योंकि आप लोग जो पक्के ब्राह्मण हैं उन्हों को समय पर साक्षी होके देखना पड़ेगा, मन्सा सेवा इतनी बढ़ेगी जो आप लोगों के साथी बनके वह सेवा करें। **वह सेवा करें और आप साक्षी होके मन्सा सेवा करो। जैसे ब्रह्मा बाप ने सेवा लायक बनाया, स्वयं साक्षी होकर देखा ना।**

➽ _ ➽ ऐसे जो निमित बड़ी आत्मायें हैं, जो सर्विस को बढ़ाने वाली हैं, वह समय पर और सेवा में बिजी रहती हैं, लेकिन यह सेवा आपके योग्य तैयार किये हुए करें, जिसकी आवाज में अनुभव की आकर्षण हो, पोजीशन की आकर्षण नही लेकिन अनुभव की आकर्षण। वह प्रभाव बहुत जल्दी पड़ेगा क्योंकि बापदादा की उन्हों को, निमित बनने वालों को एक्स्ट्रा मदद मिलती है, कोई भी हो, जिसको बापदादा का समय पर विशेष वरदान मिलता है, उसकी रिजल्ट वह खुद भी नहीं जान सकता कि क्या होती है, लेकिन यह एक्स्ट्रा बापदादा की मदद है। वरदान है।

➽ _ ➽ वह नहीं बोलता, वरदान बोलता है इसलिए ऐसी आत्मायें तैयार करो, तो बापदादा समय प्रमाण उन्हों को भी वरदान दे आगे बढ़ाये। अचानक ऐसे सरकमस्टांश बनेंगे जो आप लोगों को बहुत तपस्या करनी पड़ेगी। मन्सा सेवा करनी पड़ेगी। **समय नाजुक आ रहा है और बढ़ता रहेगा।** अभी मन्सा सेवा इतनी फोर्स से नहीं हो रही है। हो रही है, कोई कोई का मन्सा सेवा का प्रभाव भी पड़ रहा है लेकिन बहुत कम और **लास्ट के समय मन्सा सेवा के सिवाए वाचा नहीं चलेगी। जिन्हों को निमित बनायेंगे उन्हों को भी अभी चांस है**, जब नाजुक समय आयेगा तो उन्हों को भी चांस नहीं मिलेगा इसलिए अभी उन्हों को चांस दे दो, नजदीक आयेंगे, वारिस भी बन सकते हैं क्योंकि अभी हालातें आपके हर ग्रुप के कार्य को मदद कर रही हैं।

➽ _ ➽ अभी सभी समझते हैं कुछ होना चाहिए, होना चाहिए। बिचारों को पता तो है नहीं लेकिन चाहना है कुछ परिवर्तन होना चाहिए। आप तो जानते हो ना कि परिवर्तन होना है और क्या होना है। वह चिंता में है, क्या होगा, क्या होगा! आप जानते हो कि **हमारा राज्य आना ही है, खुशी है।** अति में जा रहा है और अन्त होके आदि आनी है इसलिए आप सर्विस करने वालों को अभी जल्दी-जल्दी छांटों और उन्हों को आगे बढ़ाओ। अच्छा-अच्छा तो कहते हैं अभी उन्हों को अच्छा बनाने की सेवा दो। आप साक्षी दृष्टा बनके उनको शक्ति दो।

➢➢ हमे साक्षी बनना है

➽ _ ➽ साक्षी कैसे बना जाए?? साक्षी भाव की साधना कैसे की जाए??

➽ _ ➽ प्रैक्टिस

→ प्रैक्टिस करनी है दिन मे दो बार अमृतवेला और शाम को फिर दिन मे बीच बीच में

→ शाम की दिनचर्या शक्तिशाली हो एक तो योग दूसरा चिंतन

- नुमाशाम योग 6-30 से 7-30 या 6:00 से 8:00

→ **शाम का योग उतना पावरफुल हो जितना सुबह का अमृतवेला**

→ **साक्षी के लिए सुबह को शक्तिशाली बनाना फिर शाम को और फिर दिन को शक्तिशाली बनाना है**

→ साक्षी भाव की प्रैक्टिस करनी है

→ **ड्रामा की जितनी प्वाइंटस है उनको बहुत गहराई से रिवाइज करना**

- सबसे अच्छा समय शाम का है

➳ _ ➳ ड्रामा के प्वाइंटस

→ **ड्रामा अनादि है कल्याणकारी है**

→ **ड्रामा हूबहू रिपीट हो रहा है**

→ ड्रामा में सभी सम्पूर्ण निर्दोष है

→ ड्रामा विविधतापूर्ण है

→ ड्रामा कुछ भी नया नही है

→ **ड्रामा भगवान को पसंद है**

→ इस ड्रामा की टिकटिक चालू ही रहती है

→ ड्रामा पूरा हो रहा है

→ ड्रामा में हमारा श्रेष्ठ पार्ट है

→ **ड्रामा मे जो हो रहा है सत्य है फिक्स है**

→ इस ड्रामा में मेरा ये पार्ट है

→ **मेरा और मेरा ये केवल किरदार है जो मै अदा कर रहा हूं**

→ **स्वयं को साक्षी होकर देखना है**

→ जो विचारो का झंझाल है उनसे डिटैच हो जाते है थोडे समय के लिए

➳ _ ➳ परमधाम की स्थिति वह स्थिति है जहां पर संकल्प ही नही है

→ ये संकल्प ही अटका कर रखते है वहां संकल्पों की भाषा नही है

- संकल्पों की भाषा तो सूक्ष्म वतन मे है

➳ _ ➳ परमधाम मे कोई आलाप नही कोई संगीत नही शब्द नही कोई भाषा नही कोई स्पीच नही साइलेंस की भाषा है

→ **<u>जिसने वो भाषा सुन ली उसके जीवन मे साइलेंस का संगीत व वो हर भाषा को सुन सकता है</u>**

→ **<u>वो परम सत्य है उसे व्यक्त नही किया जा सकता सम्पूर्ण सत्य है</u>**

→ **<u>सत्य अभाष्य है निर्वचनीय है सत्य को कहा नही जा सकता</u>**

→ सत्य परम है सत्य सर्वोच्च है

➽ _ ➽ साक्षी अर्थात ड्रामा की सारी प्वाइंटस ड्रामा का सारा ज्ञान

→ क्योकि इस जीवन के जो रहस्य है वो रहस्यो मे ही व्यक्ति उलझ जाता है

■ इसलिए ड्रामा के प्वाइंट को याद करना है प्रैक्टिस करनी है सुबह और शाम

➢➢ कैसे इस संसार के खेल को निरंतर साक्षी होकर देखते रहे?? उसके लिए चाहिए

➽ _ ➽ वैराग

→ इस संसार मे कहीं भी आंख न डूबे निरंतर वैराग रहे

→ ये देह और दुनिया सड़ी हुई है देख लिया देह और देह के सम्बंधो को

→ यहां के सुख सभी तुच्छ है उस साइलेंस के आगे सब छोटा है

■ अंदर का जगत बाहर के जगत मे बहुत बडा है

→ **<u>धधकता वैराग हो बिना इस वैराग के अध्यात्म मे उन्नति हो नही सकती</u>**

→ वैराग शब्द कितना अद्भुत शब्द है रस है मीठा है वैराग शब्द उच्चारण करते ही डिटेचमेंट हो जाती है

→ **<u>मै बेहद का वैरागी हूं मैं परम वैरागी हूं ऐसा वैराग का भाव हो सब कुछ करते हुए</u>**

■ इस राजपथ पर चलकर परम अवस्था तक पहुंचा जा सकता है

→ योगी की निशानी ही वैराग है

→ **<u>सब कुछ होते हुए सारे साधन होते हुए योग्यताओं भी होते हुए सबसे अलग</u>**

■ ये राजऋषि की परिभाषा है

→ इस संसार को साक्षी होकर देखना इस संसार के वास्तविक रूप से देखना

- जैसा वो है सार क्या है असार क्या है नित्य क्या है अनित्य क्या है सत्य क्या है इसको देख लेना

→ आंखे जहां जहां जाती है वहा एनर्जी जाती है जिस भी चीज को देखती है वहां एनर्जी का प्रवाह चालू हो जाता है

→ अपनी देह को ही कठपुतली देखो

- आत्मा पपेटिया है देह पपेट है

→ **सब कुछ साक्षी होकर देखो**

- कल स्तुति आज ग्लानि कर रहे है कल माला पहनायेगे ऐसा संसार का स्वभाव है

➢➢ साक्षी की साधना

➽ _ ➽ एकांत मे चले जाना मौन धारण करना

→ **स्व चिंतन करना स्व से बात करना अपने ही मन को समझाना अपने मन बुद्धि से बात करना**

- बाहर के जगत मे जाओ तो अंदर के जगत मे जाना बंद

→ जैसे ही काम हुआ तो बस अंदर की कुटिया मे जाकर बैठ जाओ

→ उसकी खींच हो वाणी से परे जाने की

- इस सबके लिए अंतर्मुखता जरूरी है

→ व्यक्ति की एक सबसे बडी कमजोरी है उसको कम्पनी चाहिए वो हर चीज दूसरे के साथ शेयर करना चाहता है

- अगर ये शेयरिंग ही बंद हो जाए तो बहुत बडी अंतर्मुखता आ सकती है

→ जितना शेयर करते है उतनी शक्ति कम होती है

➽ _ ➽ एकांत अर्थात अपने आप मे रहना

→ एक है स्वयं एकांत का सेवन करना

→ दूसरा कोई साथ मे रह रहा है तो उसको कम्पनी देकर एकांत से जुदा न करना इसका भी ध्यान रखना है

→ एकांत डिस्टर्ब नही करना है

➽ _ ➽ निमित आत्माओं द्वारा तैयार किए हुए है उनके द्वारा सेवा में

→ आवाज मे अनुभव का आकर्षण होती है

→ सत्य की आकर्षण होती है

→ **साइलेंस की आकर्षण होती है**

→ योग की आकर्षण होती है

→ **सत्य की अनुभव की आकर्षण होती है**

→ उनके अंदर बताने का भाव होता है उसमे आकर्षण होती है

→ कोई रियालाइजेशन हुआ वो देने का भाव होता है

→ **सबसे महत्वपूर्ण ब्रह्मचर्य की आकर्षण होती है**

→ **वाचा की आकर्षण प्योरिटी की आकर्षण है**

- आवाज की वो आकर्षण आंतरिक पवित्रता से जन्म देती है

→ भाषण का आधार अनुभव, साइलेंस, ब्रह्मचर्य, देने का भाव, योग, पवित्रता, तीव्र इच्छा, जो मुझे अनुभव हुआ वो सब को हो जाए